INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

January-February-March-2022 E-ISSN – 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Vol. 9, Issue-1

Multidisciplinary Issue

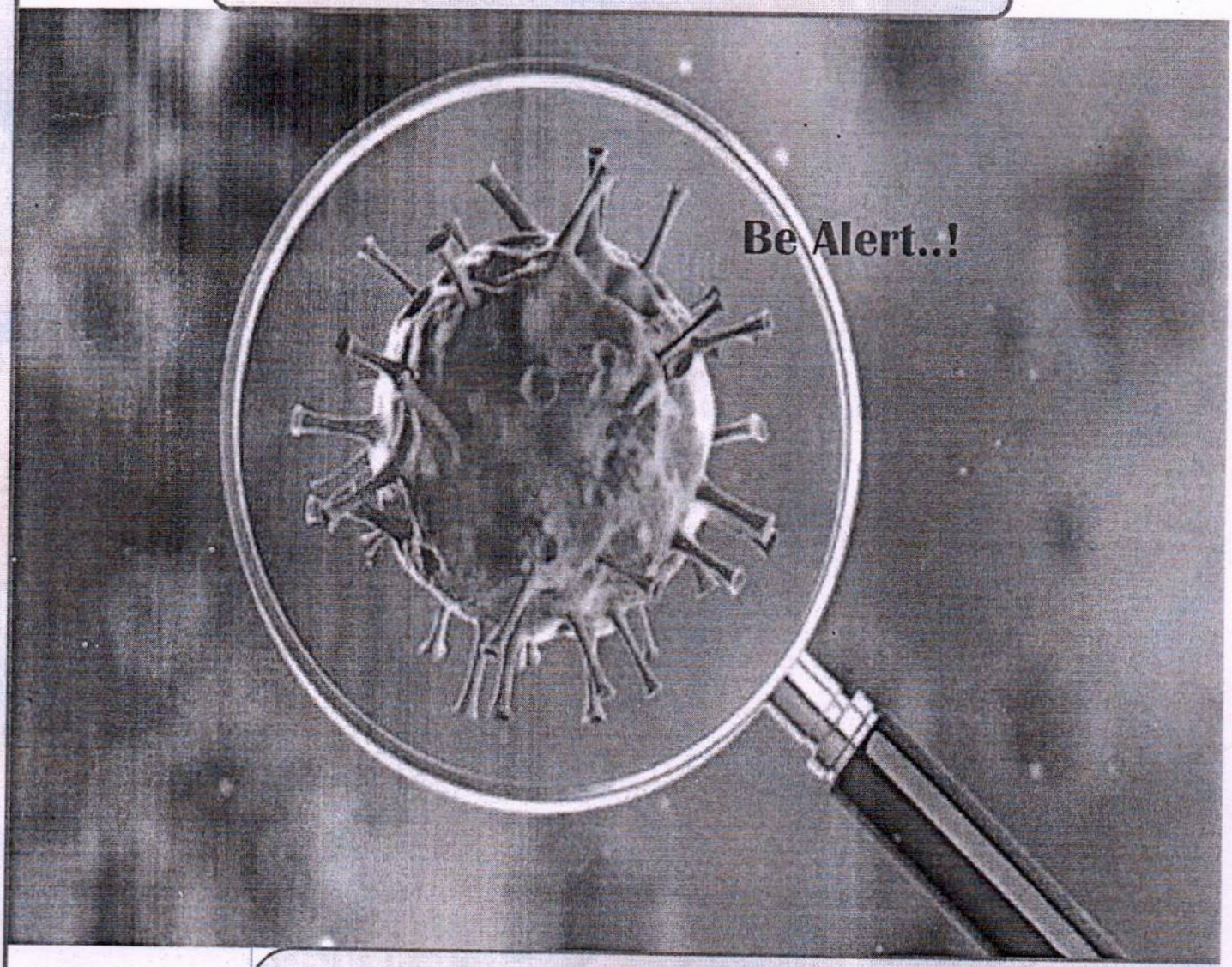

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

27	शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में नारीविमर्श	डॉ. महेंद्र रघुवंशी	141
28	मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में स्त्री विमर्श	प्रा. मीना ठाकूर	145
29	मानवता के लिए संघर्षरत नारी : 'राजो'	प्रा. हसीना मालदार	148
30	'पलकें सुलग रही है' कविता संग्रह में सामाजिक चेतना	श्री. सचिन कांबळे	151
31	अनुवाद : एक अनमोल देन	डॉ. वासुदेव शेट्टी	154
32	महिला सशक्तिकरण - आभास और वास्तव	श्री. संजय जाधव	158
33	जल, कृषी, स्वास्थ, सामाजिक जीवन, औद्योगिक क्षेत्र के विकास में पर्यावरण का प्रभाव	डॉ. मीना ठाकूर	162
	मराठी विभाग		
34	आदिवासींचा होळी उत्सव	डॉ. अंजली मस्करेन्हस	165
35	'जत्रा' या कथासंग्रहातून येणारे तडवी बोली व समाज जीवन	डॉ. धनराज धनगर	170
36	नंदुरबार जिल्ह्यातील महार समाजाचे लोकजीवन आणि लोकसंस्कृती	प्रा. कल्पना साळवे	175
37	कोकणा बोली आणि मराठी भाषा	श्री. लक्ष्मण टोपले	178
38	गडकऱ्यांची नाट्यसृष्टी व स्त्री प्रतिमा	प्रा. यादवराव गहाणे	185
39	विविध प्रश्न, उपरोधिक शैलीत मांडणारा प्रयोगशील नाटककार : शफाअत खान	डॉ. रवींद्र कांबळे	189
40	वेदनांची अनुभूती देणारा काव्य संग्रह - 'विस्तवाचे ओझे'	प्राचार्य डॉ. भाऊसाहेब गमे	194
41	'मी मेलो त्याची गोष्ट' - एक वास्तवाभिमुख कादंबरी	डॉ. संगीता शेळके	200
42	'काळी गंगा' कादंबरेंल्या वातावरण निर्मितीचो चिकित्सक अभ्यास	दीपराज सातर्डेकर	203
43	आंबेडकरवादी काव्यप्रकार	डॉ. गोविंद रावळेकर	212
44	डॉ. आंबेडकर यांचा शेती विषयक दृष्टिकोन	राहुल गोंगे	217
45	आदिवासी विकास विभागामार्फत मागासवर्गीय कल्याण अंतर्गत राबविण्यात येणाऱ्या योजना	प्रा. कृष्णा पाडवी	221
46	रशिया-युक्रेन युद्धाचा भारतावर झालेल्या व होणाऱ्या परिणामांचा अभ्यास	डॉ.एन.एन.गाढे	229
47	भारतातील लघुउद्योगांच्या समस्यांचा अभ्यास	प्रा. युवराज जाधव	234
48	लाखनी तालूक्यातील भात गिरणी कामगारांचा अभ्यास	डॉ. सुरेश बन्सपाल	241
49	केंद्रवर्ती अर्थसंकल्प (न्युक्लिअस बजेट) योजना	प्रा. कृष्णा पाडवी	245
50	समाजकार्य शिक्षणाचे भारतीयकरण	डॉ. अनंत देशमुख	250
51	भारतातील संसदेचा उगम आणि विकास	डॉ. देविदास नरवाडे	255
52	महिलांचे आर्थिक सक्षमीकरण : स्वरूप व महत्त्व	डॉ. विवेक चौधरी	260
53	माहिती अधिकार कायदा २००५- एक कायदेशीर अधिकार	डॉ. पद्माकर दारोंडे	264
54	पुणे शहरातील निवडक ऐतिहासिक स्थळे : एक अभ्यास	डॉ. राजेंद्र रासकर	269
55	बागलाण मधील राजकीय व सामाजिक चळवळींचा अभ्यास	रत्नाकर सुभाष वाघ	274
56	सिट अप्सचा कुमार गटातील विद्यार्थ्यांच्या स्नायुंची ताकद व दमदारपणावर होणारा परिणाम	डॉ. विशाल गायकवाड	278
57	सूर्यनमस्कार - एक सर्वांग परिपूर्ण व्यायाम	प्रा. भाऊसाहेब थोरात	281

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Vol. 9, Issue 1
Jan – Mar 2022

जल, कृषी, स्वास्थ, सामाजिक जीवन, औद्योगिक क्षेत्र के विकास में पर्यावरण का प्रभाव

डॉ. मीना ठाकूर,
हिंदी विभाग,
श्री शाहू मंदिर महाविद्यालय पुणे.
मोबा.– 9850211439, meenasalunkethakur@gmail.com

'पर्यावरण' मानवीय जीवन ही नही तो समस्त सृष्टी में जो जीव जंतु प्राणी, पेड, पशु, नदी, समुंदर आदि को निरंतर जीवित रखने का प्रयास करता है, किन्तु मनुष्यने पर्यावरण को नष्ट करते हुए भौतिक सुख–साधनों का निर्माण किया है, जिसके कारण आज पर्यावरण में बदलाव हो रहे है, अचानक· बारिश, धूप, थंड का वातावरण निर्माण होने की अनेक समस्याओं का सामना सभी जीव जंतुओंको भुगतना पडा रहा है, आधुनिकता औद्योगिकता के कारण जल प्रदुषण, मानव स्वास्थ, कृषि, सामाजिक जीवन की मुश्कीले बढ रही है.कृषि क्षेत्र में मनुष्य ने अपने फायदे के लिए अनाज, फल, सब्जियों का उत्पादन अनैसर्गिक केमीकलयुक्त निर्माण किया है, जिससे उत्पादन तो बढा किन्तु लोगों में स्वास्थ, आरोग्यसंबंधी समस्याए बढने लगी, पशुपालन व्यवसाय करके तो अमानवीय व्यवहार मनुष्य प्राणीयों के साथ कर रही है, जिसके कारण मानव कोही अनेक महामारियों का सामना करना पडेगा. लेकिन मनुष्य की समझ में क्यों नही आ रहा है कि हमारे ही वजह के यह सबकुछ बदलाव हो रहा है, इसे रोकना चाहिए अन्यथा हर धर में प्रत्येक व्यक्ति को अनेक व्याधियों से जुझना पडेगा. नैसर्गिकता का ही मानव को बचा सकती है. भारत कृषि प्रधान देश माना जाता था किन्तु आज हमने सभी अनाज, फल, सब्जियों में मिलावट कर मनुष्य जीवन एवं अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है. इसलिए मानव जीवन केवल पैसो के कारण हमने अपनी आगे की पीढी का जीवन एवं भविष्य दोनों खतरे में किया है.

" आधुनिक कृषि, खेती, पशुपालन मानव जीवन के लिए आजीविका का साधन है, क्योंकि यह खेती और पशुपालन व्यवसाय माध्यमों के उत्पादों जैसे खाद्य, भोजन, फाइबर और कई उत्पादों का उत्पादन करने की प्रकिया है, किन्तु मनुष्य ने रासायनिक पदार्थों का उपयोग करने की वजह से सभी जानवरों, पशु, पक्षी, प्राणीयों और मनुष्य के लिए यह हानिकारक है•, अनेक व्याधियों, महामारियो से सभी को जूझना पड रहा है."1 विश्व में सभी मानव जीवन का स्वास्थ खतरे में है, क्योंकि भूमि–जल का प्रदुषित होने के मनुष्य की नई पीढी में अनेक विकलांग, ब्रेन डॅमेज, हार्ठ, कीडनी, कॅन्सर, डायबीटीज जैसी महाभयानक बीमारीयों से ग्रस्त व्यक्ती की कार्यकुशलता की समस्या निर्माण हो रही है. कीटकनाशक के अत्याधिक उपयोग के ही मानव जीवन खतरें मे है. कीटकनाशक बायोडीग्रेडेबल होते है, जो मानव के खाद्यपदार्थ में मिल जाते है, जो मानव स्वास्थ के लिए नुकसान दायी है. भूमी, जल, वायु, ध्वनी, जनसंख्या वृध्दि इन सब मुद्दे पर नियंत्रण आवश्यक है. हमारे पर्यावरण को जीवित रखने के लिए इसे बचाने, समझने का प्रयास होना चाहिए.

" पर्यावरण बदलाव के कारण महामारीयां बढ रही है जिससे मानव के सामाजिक जीवन एवं संस्कृति, रुढी, परम्परा, त्योहार जिसमें लोग संघटित होकर मनोरंजन करते थे वह सबकुछ बदलना पड रहा है, करोना के कारण तो सामाजिक, शारिरीक, मानसिक जीवन में परिवर्तन हो रहा है. मनुष्य को यह स्वीकारना होगा कि पर्यावरण बदलाव के कार्बनडायक्साईड बढने से मनुष्य का मृत्युदर बढ रहा है, हार्टअटैक, कीडनीफेल, ब्रेनडेड, मल्टीऑर्गन से हजारों की तादात मे लोग मर रहे है.जिससे सामाजिक जीवन में संघर्ष बढ रहा है."2

मानव समाज में रोजगार तथा औद्योगिक क्षेत्र में रसायनों का प्रयोग के कारण आर्थिक संकट बढ रहा है. जन्मदर में कमी, मृत्युदर में उतारचढाव इतनी भयानक परिस्थिति पर्यावरण के हानी से हो रही है. विकलांग, मानसिक बिमारी, शारीरिक कमजोरी के कारण मानव समाज की बौध्दिक क्षमता का विकास नहीं के बराबर है.

सामाजिक, आर्थिक, राजकिय, नैतिक विचारों का आदान–प्रदान नही हो रहा है. लोग आपस में संघर्ष कर रहे है. मानवीय समाज की मजबूती एवं प्रग्लभता का प्रयास करने के लिए सामाजिक पक्ष को मजबूत बनाना जरुरी है.

पर्यावरण प्रदुषण और महत्वपूर्ण संसाधनों से संबधित मुख्य समस्याए, क्षेत्रिय स्तर से लेकर विश्व स्तर पर अलग–अलग है. वायु प्रदुषण मुख्य रुपसे उद्योंगों तथा स्वचलित वाहनों में जीवाश्म ईंधनों, जैसे कोयला तथा पेट्रोलियम के जलने से होता है. ये मनुष्य, जानवरों तथा पौधों के लिए हानिकर है इसलिए हमारे आसपास के वायु को स्वच्छ रखने के लिए इनको हटाना जरुरी है. " घरेलू वाहित मल, जो जलाशयों के प्रदुषण का सर्वाधिक सामान्य स्त्रोत होने के कारण घुली हुई ऑक्सिजन की आवश्यकता बढ जाती है. घरेलू वाहित मल में पोषक तत्व, खासकर नाइट्रोजन और फॉस्फोरस अधिक होते है. औद्योगिक अपशिष्ट जल में प्रायः विषैले–रासायनिक, खासकर भारी धातु और जैव योगिक काफी होते है. औद्योगिक कारखानों का जल जीवधारियों के लिए नुकसानदेह है. "3 महानगरपालिका की तरफ से इस समस्याओं से निपटने के लिए ठोस कार्यवाही की आवश्यकता है. कारखानों की चिमनीयों से निकलनेवाली जहरीली गॅस और रसायनयुक्त जल के कारण यह मनुष्य के लिए खतरनाक है.

वैश्विक प्रकृति की मुख्य पर्यावरणीय समस्याएं है ग्रीन–हाऊस के बढते हुए प्रभाव, जंगलों का विनाश, जिसके कारण पृथ्वी पर गर्मी का प्रभाव बढ रहा है, और समतापमंडल में ओजोन का अवक्षय हो रहा है. " कार्बन डायऑक्साइड के उत्सर्जन में वृध्दी और वनोन्मूलन की वजह से ही जल वृष्टि, वैश्विक तापमान में भारी परिवर्तन होने से सभी जीवधारियो का काफी नुकसान हो रहा है. जिससे अनेक महामारियां, त्वचा विकार, कॅन्सर जैसे विकारों से मानवीय जीवन खतरे में है, इसलिए मानव समाज को वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के खतरों से अवगत होकर उसे बचाने का प्रयास करना अत्यावश्यक है."4

अच्छा पर्यावरण ही प्राकृतिक चीजों के कारण पृथ्वी पर जीवन संभव बनाती है. जैसे जल, वायु, सुर्यप्रकाश, भुमि, अग्नि, वन, पशु, पौधें, कृषि, विज्ञान आदि से ही मानव जीवन का अस्तित्व बना है, जिसमें प्रमुख घटक पर्यावरण है. " ऐसा माना जाता है कि पुरे ब्रम्हाण्ड में केवज पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा गृह है जहॉ जीवन के अस्तित्व के लिए जरुरी पर्यावरण मौजूद है. पर्यावरण के बिना यहॉ हमें भविष्य में जीवन की संभावना निश्चित करने के लिए पर्यावरण को स्वस्थ और सुरक्षित रखने के लिए प्रयास करे. प्रत्येक मनुष्य के लिए यह सबसे अनमोल जिम्मेदारी है."5 कृषी क्षेत्र में हानिकारक रसायनों के कारण, मिट्टी, जल, वायु, मानव जीवनधारी सभी का जीवन खतरे में है. वाईल्ड लाईफ को जलजीव जंतुओं को पूरी इकोसिस्टीम को बचाने का प्रयास के मनुष्य ही कर सकता है इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा. 'प्लास्टीक' अनिवार्य रुप से बंद करना होगा तभी हम होनेवाले पर्यावरण बदलाव को रोकने का प्रयास कर सकते है और आनेवली पीढी का भविष्य आरोग्य सहित बना सकते है. इसमे मानव जीवन सुखमय होगा. अगर पर्यावरण के प्रति मनुष्य की संवेदना नही जागृत हुई तो समग्र सृष्टि का विनाशकाल तय है. पर्यावरण सुरक्षा के लिए हर व्यक्ति पर दायित्व है, कि वह पर्यावरण की शक्ति को पहचाने और उसे समझकर बचाने का बार बार प्रयास करे.

भारत की पर्यावरणीय समस्याओ में विभिन्न प्राकृतिक, मानवीय, सामाजिक, कृषि, आरोग्य और जीवजंतु, पशुपक्षियों, जंगली जानवर, आदि सभी का अस्तित्व खतरे में है, जो पर्यावरण के बदलाव और विनाश से हो रहा है. चकवात, वार्षिक मानसून बाढ, जनसंख्या मे वृध्दि, बढती हुई व्यक्तिगत खपत, औद्योगीकरण के विकास, घटिया कृषि पध्दतियां और संसाधनों का असमान वितरण से मानवीय जीवन स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है. वाहनों की संख्या में बढत, उससे उत्पन्न प्रदुषण समस्याएं भयानक है. एक अनुमान के अनुसार खेती योग्य भूमिका 60 प्रतिशत भूमिकटाव, जलभरण और लवणता से ग्रस्त है. 1947 से 2002 के बीच, पानी की औसत वार्षिक उपलब्धता प्रत्येक व्यक्ति 70 प्रतिशत कम होकर 1822 घन मीटर रह गयी है तथा भूगर्भ जल का अत्याधिक दोहन हरियाणा, पंजाब व उत्तर प्रदेश में एक भयानक समस्या का रूप ले चुका है. औद्योगिक और मोटार वाहन प्रदुषण के साथ मिलकर वातावरण का तापमान बढ रहा है. जिसकी वजह से मौसम में बदलाव से समस्याए बढ रही है.

औद्योगिक क्षेत्र, वाहन उत्पादन, प्रदुषण, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि से भयानक प्रदुषण की समस्या बढ रही है, जिससे पर्यावरण का प्राकृतिक समतोल नष्ट हो रहा है. हमें यह सोचना एवं समझाना होगा कि मानवी जीवन मे यह सारे तत्वों का प्रभावित होने से मानव के साथ–साथ सभी जीवजंतु, पशुपक्षी, जानवर, वनसंपदा, अन्नसंपदा इन का अस्तित्व रहेगा अन्यथा, कृषि, स्वास्थ्य, औद्योगिक क्षेत्र के विकास पर पर्यावरण का गहरा असर पड सकता है. औद्योगिकरण, वैश्वीकरण, विज्ञान, इंडस्ट्री लायझेशन, रसायनों का उत्पादन वापर, खेती, कचरे को जलाना आदि के कारण बडे शहरों मे पर्यावरण प्रदुषण की समस्याएं बढ रही है. मुंबई, मद्रास, दिल्ली, कलकत्ता, हैदराबाद, बैंगलोर, पुणे, जम्मु काश्मीर आदि सभी राज्यों में विषारी वायु हवा, जल, अन्न, आरोग्य सभी की व्यापक समस्याओं के साथ मानवीय जीवन का संघर्ष बढ रहा है. इसे रोकने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण के संदर्भ में सभी वैज्ञानिक जानकारी लेकर उसे अमल करना चाहिए.

घर, परिवार, समाज, देश, राष्ट्र, विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण को बचाने तथा स्थिर रखने का प्रयास करना चाहिए. सोलार, एनर्जी, वीन्ड एनर्जी, आधुनिक मशीनों का उपयोग करे. नैसर्गिक क्षमता एवं शक्ति को पहचानकर उसे मजबूती से बनाए रखे. जल प्रदुषण, ध्वनी प्रदुषण, विषारी वायू प्रदुषण सभी तरह के प्रदुषण को नियंत्रित करना है. प्रत्येक व्यक्ति को अपने तथा आनेवाली पीढी के स्वास्थ्य के प्रति जागृत होकर उस समस्या का समाधान ढूंढना चाहिए. अर्थिक समस्या के कारण मनुष्य कुछ भी करने को तयार हो रहा है, क्योंकि उसके पास दूसरा पर्याय ही नही है. पर्यावरण को बचाने लिए हमें धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, अंधश्रध्दा, झूठी परम्परा, त्योहार, उत्सव, मनोरंजन आदि में बदलाव लाना है. कम खर्चे की बजाय कौनसा कार्य करना जरूरी है, या नही इसे समझे, इसे नियंत्रित करे.

अत्यावश्यक वस्तु ही खरीदें, व्यर्थ का कचरा जमा न करे. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग कम से कम करे. जिसके कारण विषारी कचरा बढ रहा है. जिसे जलाया जाता है, और हवा विषारी बन रही है. रियूज करना सीखे, रिसोर्स का सही तरीके से वापर करे अन्यथा अनेक क्षेत्र में कटौती बढ रही है, जिसका विपरित परिणाम मानव जीवन पर हो रहा है.

संक्षेप में मानव जीवन पर मनुष्य की मानसिकता, अनदेखा करना सोच समझकर निर्णय न लेने की बजह से मनुष्य को अपने शरीर तथा मन की भाषा समझ में नही आ रही है और आसपास जो घटनाएं घट रही है वह अधिक बढती ही जा रही है. ' पर्यावरण ' ही हमारी शक्ती है, सबकुछ है जिसे हम दिन रात अनुभव करते है. आरोग्य, कृषी, पशुपालन, कारखानो आदि सभी क्षेत्रों की समस्याएं पर्यावरण खतरे के कारण बढ रही है. समाज की सामाजिक विषमता के कारण भी मनुष्य की समस्याए बढती जा रही है. साक्षरता, निरक्षरता, लोकसंख्या का विस्फोट होने की बजह से भी पर्यावरण खतरे में है. आत्म केंद्रित संस्कृती, समाज के कारण लोग गलतफहमी का शिकार हो रहे है. मानव जीवन पूर्णतः पर्यावरण पर ही निर्भर है, इसलिए गांव में ही विकास के साधनों को बढाना चाहिए, कायदे कानुनों का सही तरीके से प्रयोग होना चाहिए. जिससे लोगों की मानसिकता पर नियंत्रण लाया जा सकता है. गुन्हेगारी प्रवृत्ति की बजाय पर्यावरण की रक्षा मानवता की रक्षा की समझ व्यक्ति को होनी चाहिए.

संदर्भ सूची –

1. 2020 –2021 NCERT पब्लीकेशन
2. 2019 – 2020 NCERT पब्लीकेशन
3. 2018–2019 NCERT पब्लीकेशन
4. 2017–2018 NCERT पब्लीकेशन
5. 2016–2017 पर्यावरण की समस्याएं (विकी पीडिया)